अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020) Impact Factor: 5.659
[ISSN: 2348 - 2605]

Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

डॉ0 शत्रुघ्न प्रसाद के उपन्यास ''शिप्रा साक्षी है'' की कथावस्तु का विश्लेषण

डॉ0 ओंकार पासवान

सहायक शिक्षक (म0 राम नारायण पुरी +2 वि0 सकसोहरा (पटना)

शिप्रा साक्षी है – इस उपन्यास का प्रथम संस्करण 2009 में पुस्तक भवन, नई दिल्ली से हुआ है। यह उपन्यास शकारि विक्रमादित्य द्वारा शकों के पूर्ण पराभव पर आधारित है। ''शिप्रा साक्षी है'' पुस्तक के प्रारम्भ में ही शत्रुघ्न प्रसाद लिखते है – ''ऐतिहासिक उपन्यास इतिहास का चर्बित – चर्वण नही होता , अतीत रस का आस्वादन नही होता। यह तो गतिशील मानव–जीवन के यथार्थ का आलोकन –आलोचन होता है खण्डहर में सोया अतीत उठकर वर्तमान से जुड़ जाता है । परिस्थितियों से जूझता वर्तमान जूझे हुए अतीत से कुछ समझता है और भविष्योंन्मुख हो जाता है। इसी दृष्टि से शिप्रा साक्षी है की रचना हुई है।'' इस उपन्यास में प्रथम शताब्दी के प्राचीन भारत के गौरव पूर्ण इतिहास का वर्णन है। इसकी कथा उज्जयिनी से संबंद्व है। अतः यह भोपाल और उज्जयिनी में अधिक चर्चित बना हुआ है। उस बिलासिता के लिए वह जैन साध्वी सरस्वती का अपहरण करवाता है। उस अपहरण से कुछ जैनाचार्य कालक प्रतिशोध स्वरूप शकों को आमंत्रित कर लेते है। राजा गंधर्वसेन मारे जाते है, तथा उज्जयिनी पर शको का अधिकार अर्जित ज्ञान के आलोक में समाज को बाँधने का प्रयास करता है। आंध्र नरेश शंतकर्णि के पास जाकर राष्ट्रीय गौरव जागृत करने हेतु सहायता माँगता है तथा शकों के आंतक से भारत को मुक्त कराता है। बाद मे यह विषमशील विक्रमादित्य की उपाधि धारण कर अवंतिका को राजसिहासन पर बैठता है और अपने विजय के उपलक्ष्य में नयें संवंत विक्रम संवत का प्रारंभ करवाता है।

शिप्रासाक्षी है नामक उपन्यास को केन्द्र में रखकर डॉ0 देवेन्द्र दीपक ने जुलाई 1996 ई0 में भोपाल में एक गोष्ठी का आयोजन किया था। इस आयोजन में डॉ0 रमण मालवीय, डॉ0 विनय राजाराम, श्री कृष्ण चराटे, श्री पुष्पद्रे वर्मा तथा श्री रमेश शर्मा जी उपस्थित हुए थे। इन गोष्ठियों में उज्जयिनों के

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020) Impact Factor: 5.659
[ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ऐतिहासिक गौरव तथा विक्रमादित्य की कथा समाहित है। विक्रमादित्य के जन्म के बाद राजमहल में खुशी का ठिकाना नही रहा। राजकुमार के जन्मोत्सव पर नगर श्रेष्ठि का हृदय प्रसन्नता से भर गया और महाराज और महारानी को रजतपत्र समर्पित किया। शिवालयों में ताण्डव नृत्य हो रहा था। रथ पर महाराज गंधर्वसेन, महारानी सौम्या और कुमार शील के साथ विराजमान थे। रथ सभी नगरवासियों को अभिनंदन करता हुआ बढ़ रहा था। हवा भी मंद –मंद चल रही थी। इसी बीच रथ शिप्रा के तट पर आ पहुंचा । राजा और रानी ने राजघाट पर स्नानोपरांत सभी को दान दिया गया। पुनः रथ आगे की ओर चला गया। प्रो0 शत्रुघ्न प्रसाद का मानना है ''कुमार कभी महाकाल के ज्योतिलिंग को देखते , कभी गिरिजा एवं गजानन को और कभी नन्दिकेश्वर की मूर्ति को । हथेलियाँ जुडी हुई थी पर नेत्र विस्मय से चंचल थे। तत्पश्चात माँ ने कहा कि काजिप्रियनाथ को प्रणाम करों। ..... श्री कृष्ण ने भी इनकी वंदना की थी। इन्ही की कृपा और आर्शीवद से तुम्हारा जन्म हुआ है। ये उजैनी के सबसे बड़े देवता है। । इसके पश्चात कुमार ने सिंह सिर नवाया।

शिप्रा साक्षी है का यथार्थ यह है कि जब सत्ताधीश राजमद के पथ पर बढ़ता है तो गणतंत्र में बदल जाता है। अन्तःपुर विलास भवन और सामान्य जन राजमद के शिकार बनते है। परिणामतः आक्रोश जगता है। राजमद पराजित हो जाता है।

उज्जयिनी में गंधर्वसेन के राजमद के कारण मालव गणतंत्र राजतंत्र में बदल गया था। जैन साध्वी सरस्वती का अपहरण हो गया था। इतिहास की नई खोज बताती है कि क्रुध कालकाचार्य ने साध्वी के उद्वार के लिए शकों से सहायता ली । फलतः साध्वी का उद्धार हुआ। साथ ही साथ उज्जयिनी पर शकों का अधिकार हो गया । जब नई पीढ़ी नई दृष्टि और अपनी संकल्पित कर्मठता से समष्टि के लिए समर्पित होती है तो युग परिवर्तन होता है । विदेशी शासन, शेषण तथा दमन का चक्र रूक जाता है । फिर से जनतंत्र मुस्कराता है। विदेशी जन समाज एवं संस्कृति से जुडकर स्वदेशी बनने को आकुल हो उठता है। तभी तो विषमशील को सबने विक्रमादित्य कहा। राष्ट्रीय विजय के उपलक्ष्य में विक्रम संवंत का प्रारम्भ हुआ तथा शकों का सांस्कृतिक सामाजिक समन्वय संपन्न हुआ।

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020) Impact Factor: 5.659
[ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

इस उपन्यास में लेखक ने अतीन से वर्तमान यथार्थ को जोडते हुए विषमशील के माध्यम से अपने दृष्टिकोण को व्यक्त किया है। ''जैन शैव बौद्ध सभी संप्रदाय इसी धरती से पुष्पित हुए है। यदि विदेशी भी भारत की भूमि को अपना कहकर सामाजिक संस्कृति के महासागर में समा जाए तो क्या आपत्ति हो सकती है। किन्तु इनका अलगाव स्वयं को विदेशी और विजेता मानना अथवा भारतीय सम्प्रदायों का परस्पर वैर भाव ही तो भारत की मुख्य समस्या है।'' रमेश शर्मा के अनुसार ''शत्रुघ्न प्रसाद एक समरस तथा स्वावलम्बी समाज की संरचना के पक्षधर है। उन्होने एक संगठित सशक्त राष्ट्र की कामना की है। कोई भी राष्ट्र संगठित और समरस हुए बिना सशक्त स्वावलम्बी नही बन सकता।

डॉ0 देव शर्मा के अनुसार ''यह ऐतिहासिक उपन्यास प्राचीन भारत के गौरव का कालजयी दस्तावेज है। इसका संदेश है 'मन और मस्तिष्क में भारत भूमि का विस्तार हो हिमालय की ऊचांई हो ओर सागर की गहराई हो। यह सब इसी पवित्र भूमि के लिए अर्पित हो।'' लेखक इस संदेश को पठक तक पहुंचाने में पूर्ण सफल हुआ है।

इस उपन्यास में लेखक ने राजा विक्रमादित्य के जीवन का परिचय दिया है। साथ ही ग्रामीण परिवेश के अनुसार शिप्रा का महत्व भी प्रतिपादित किया है। आज भी गाँवों के लोगो के बीच नदी में स्नान करने की परम्परा है। यहाँ भी लोग शिप्रा में स्नान करते है। आज गॉवों में बच्चे के जन्म दिन के अवसर पर विशेष प्रकार का आयोजन करते है। उसी प्रकार विषमशील के जन्मदीन पर भी विशेष प्रकार का आयोजन किया गया है।

प्रो0 शत्रुध्न प्रसाद के उपन्यासों के आरम्भ से अंत तक कथावस्तु विश्लेषण करने पर यह बात सामने आती है कि उपन्यास में मुख्य कथा के साथ–साथ प्रासंगिक कथाओं का भी स्वाभाविक विकास होता गया है। कथानक कहीं भी खंडित नहीं है और नहीं इसको पढनें से पाठक के मन में कोई ऊब पैदा होता है। कथा का प्रमुख उद्देश्य पाठक के मन मे कौतूहल को जागृत करना होता है ताकि पाठक का मन उसमें रमे, इस दृष्टि से उपन्यास की कथा सफल है। इतने विस्तृत कथानक को रचने में कहीं भी रचना–प्रक्रिया की शिथिलता दृष्टिगोचर नहीं होती । लेखक मुख्य कथा के साथ सहायक कथाओं

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020) Impact Factor: 5.659
[ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

को जोड़ते हुए उसका सफलता पूर्वक अन्त करता है। लेखक कथानक की उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहें है। वे अतीत की कथा के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को भी जागृत किये है।

संदर्भ :–

1. शिप्रा साक्षी है, अपनी बात
2. वही पृष्ठ–12
3. वही पृष्ठ–26
4. शिप्रा साक्षी है, समीक्षा रमेश शर्मा, पत्रिका हमारा दृष्टिकोण, शत्रुघ्न प्रसाद कृतित्व विशेषांक।